Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋणमोचन मङ्गलस्तोत्रम्

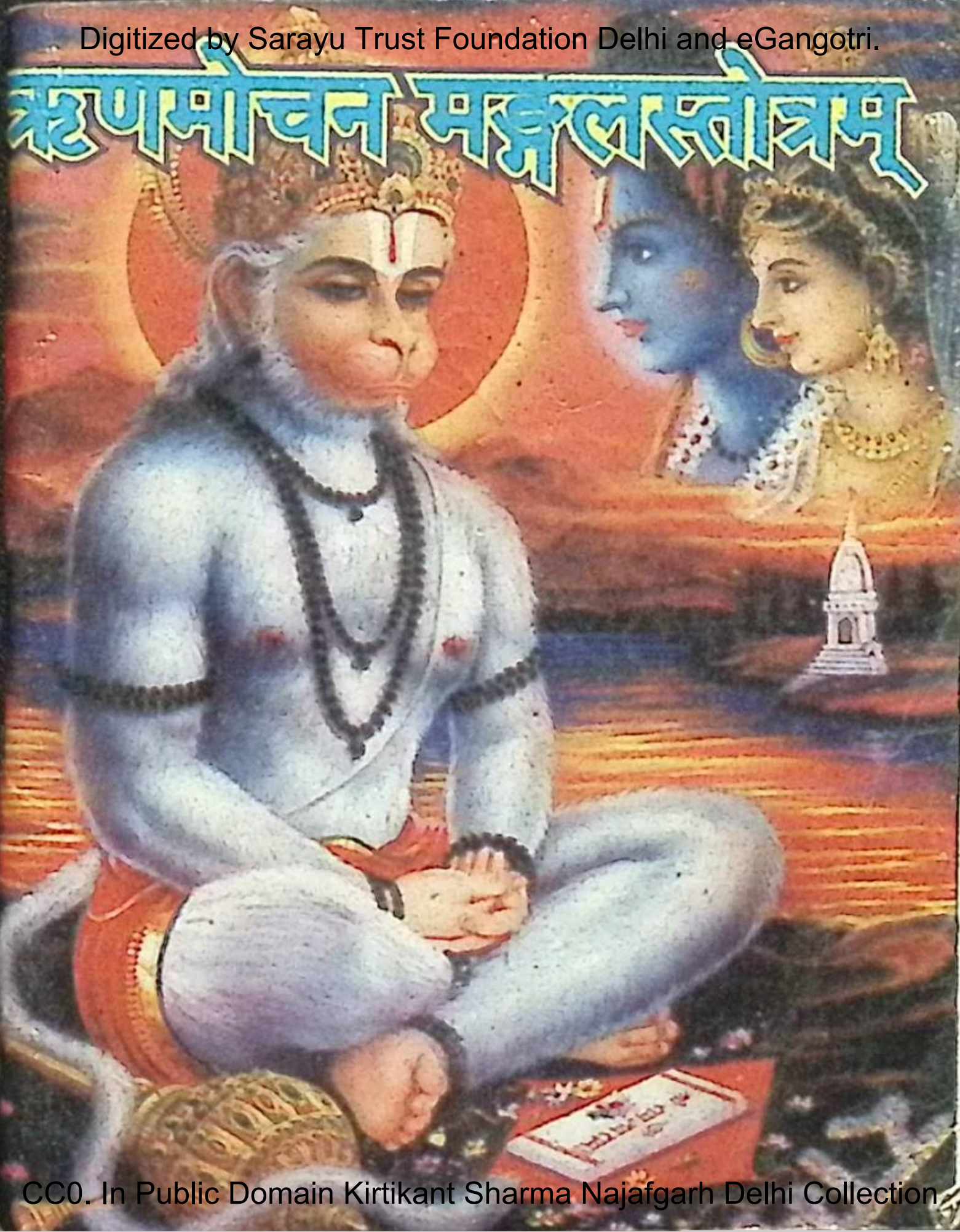

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collectio

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क- ३

ऋणमोचन-मङ्गलस्तोत्रम्

'शिवदत्ती'-भाषाटीका-सहितम्

सम्पादक तथा टीकाकार

देवरिया-जनपदान्तर्गत-'मझौली राज्य'

(सम्प्रति वाराणसी) निवासी

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री

(प्रादेशिक सरकार द्वारा सम्मानित)

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए

卐 नाथ पुस्तक भण्डार

194, दरीबा कलां, दिल्ली- 6, दूरभाष : 23275344

श्री [illegible]

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

[मूल्य]) ० ०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

फोन : ३२२५४३, ३२२४७१

सम्पादक :

आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

द्वितीय संस्करण : १९९५ ई०

संवत् २०५२ वै०

मूल्य : ८.००

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collectio

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राक्कथन

'मङ्गलो भमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः' अर्थात् भूमिपुत्र मङ्गलदेव ऋण से मुक्ति एवं धन को देनेवाले हैं। भक्ति-भाव से इनकी पूजा-पाठ तथा जपादि-अनुष्ठान करने से ये प्रसन्न होते हैं और साधक को मनवांछित फल प्रदान करते हैं, इसमें संशय नहीं।

अब तक ऐसी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं थी, जिसमें विधि-विधानपूर्वक मङ्गल की शान्ति का उल्लेख हो और वह हिन्दी टीका सहित हो, जिसके द्वारा सर्व-साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकें। इस कमी को पूरा करने के लिए ही प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित की गयी है। यह पुस्तक साधारण पढ़े-लिखे विद्वानों को ही नहीं, अपितु सभी व्यक्तियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध हुई है।

इसमें—भौम-मन्त्र जप-विधि, भौम-शान्ति, मङ्गलव्रत-विधान, मङ्गलस्तोत्र, कवच, व्रत-कथा एवं व्रतोद्यापन, चालीसा एवं आरती आदि अनेक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण विषय दिये गये हैं, जिससे इसकी उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गयी है।

—शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सी. के. ५/२६ ए.
भिखारीदास लेन (ठठेरी बाजार),
वाराणसी

विजया दशमी
३ अक्टूबर, सन १९९५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ-संख्या
भौममन्त्रजपविधिः (वेदोक्त)	७
भौममन्त्रजपविधिः (तन्त्रोक्त)	१३
भौमशान्तिः	२१
मङ्गलव्रतविधानम्	२५
ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्	३०
अङ्गारकस्तोत्रम्	४५
मङ्गलकवचम्	४८
मङ्गलव्रतविधानम्	५२
मङ्गलवारव्रतकथा	५४
मङ्गलव्रतोद्यापनम्	६५
मङ्गल का ग्रहगोचर फल, यन्त्र धारण तथा मन्त्र जप-विधान	७०
मङ्गल-यन्त्रम्	७१
यन्त्र धारण-विधि	७१
भौम का वैदिक जप-मन्त्र	७२
तन्त्रोक्त भौम मन्त्र	७२
पुराणोक्त भौम मन्त्र	७२
भौम गायत्री मन्त्र	७३
मङ्गल ग्रह की मन्त्र-जपादि तालिका	७३
मङ्गल-चालीसा	७३
मङ्गल-आरती	७९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलयन्त्रम्

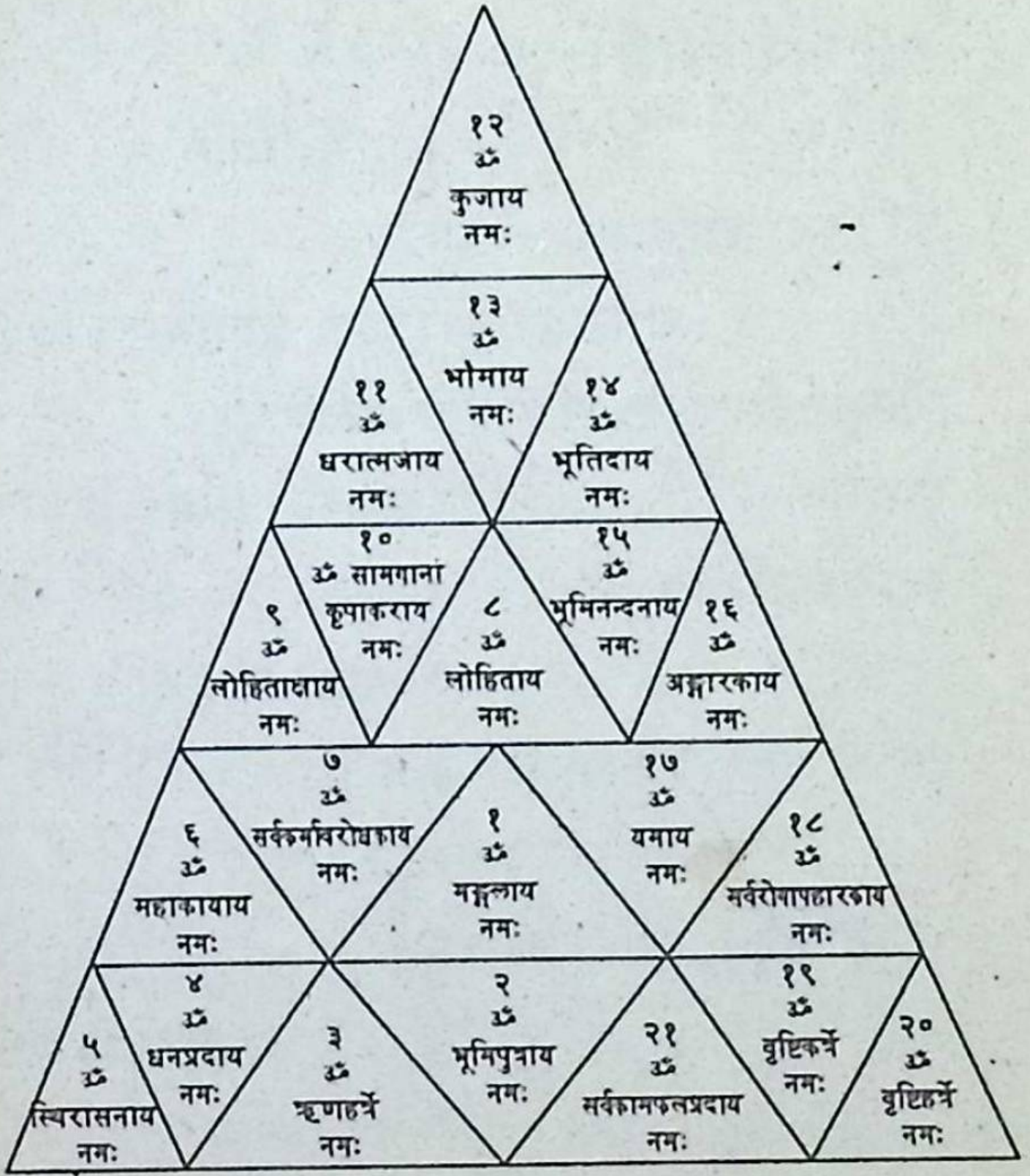

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः

ध्यानम्

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली
सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः ।।१।।

भौमो दक्षिणदिक्-त्रिकोण-यमदिग्
विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक-मेषयोः सुरगुरु-
श्चार्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरिः षट्त्रिफल-प्रदश्च वसुधा
स्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः,
कुर्यात् सदा मङ्गलम् ।।२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतम्

ऋणमोचन-मङ्गलस्तोत्रम्

'शिवदत्ती'-भाषाटीका-सहितम्

वेदोक्त-

भौममन्त्रजपविधिः

विनियोगः—ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाक्षऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, भौमो देवता, ककुद्-बीजम्, भौमप्रीतये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः— ॐ विरूपाक्षऋषये नमः, शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमः, मुखे। भौमदेवतायै नमः,

---

विनियोग—हाथ में जल लेकर 'ॐ अग्निर्मूर्द्धेति' से 'जपे विनियोगः' तक मन्त्र पढ़कर जल छोड़ना चाहिए।

ऋष्यादिन्यास—'ॐ विरूपाक्षऋषये नमः' इस मन्त्र से शिर का, 'गायत्रीच्छन्दसे नमः' से मुख का, 'भौमदेवतायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदि। ककुद्बीजाय नमः, गुह्ये। भौमप्रीतये विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ अग्निर्मूर्द्धेत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ दिवः ककुदिति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ पतिः पृथिव्या-ऽअयमिति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अपामित्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ रेताठ०सीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ जिन्वतीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

नमः' से हृदय का, 'ककुद्बीजाय नमः' से गुप्त स्थान का तथा 'भौमप्रीतये विनियोगाय नमः ' इस मन्त्र से सर्वाङ्ग (सभी अंग) का स्पर्श करे।

करन्यास—'अग्निर्मूर्द्धेत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों को, 'ॐ दिवः ककुदिति तर्जनीभ्यां नमः' से दोनों हाथ के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों, 'ॐ पतिः पृथिव्याऽअयमिति मध्यमाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठों से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदयादिन्यासः –

ॐ अग्निर्मूर्द्धेति हृदयाय नमः। ॐ दिवः ककुदिति शिरसे स्वाहा। ॐ पतिः पृथिव्याऽअयमिति शिखायै वषट्। ॐ अपार्ठ.कवचाय हुम्। ॐ रेतार्ठ.सीति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जिन्वतीत्यस्त्राय फट्।

मध्यमा अँगुलियों को, 'ॐ अपामित्यनामिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की अनामिका अँगुलियों को, 'ॐ रेतार्ठ.सीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ के कानी अँगुलियों को छुए तथा 'ॐ जिन्वतीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' से दोनों हथेलियों तथा उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करना चाहिए।

हृदयादिन्यास– 'ॐ अग्निर्मूर्द्धेति हृदयाय नमः' इस मन्त्र से दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का, 'ॐ दिवः ककुदिति शिरसे स्वाहा' से शिर का, 'ॐ पतिः पृथिव्याऽअयमिति शिखायै वषट्' से शिखा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्यासविधिः–

ॐ अग्निरिति शिरसि। ॐ मूर्द्धा इति ललाटे। ॐ दिव इति मुखे। ॐ ककुदिति हृदये। ॐ पतिरिति नाभौ। ॐ पृथिव्याः, इति कट्याम्। ॐ अयमिति ऊर्बोः। ॐ अपामिति जानुनोः। ॐ रेतार्ठ०सीति गुल्फयोः। ॐ जिन्वतीति पादयोः।

का, 'ॐ अपार्ठ.कवचाय हुम्' से दाहिने हाथ से बाँयें कन्धे और बाँयें हाथ से दाहिने कन्धे का स्पर्श, 'ॐ रेतार्ठ.सीति नेत्रत्रयाय वौषट्' से दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों या ललाट के अग्रभाग का स्पर्श करे, 'ॐ जिवतीत्यस्त्राय फट्' इस मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठों को चिटका देना चाहिए।

न्यास की विधि– 'ॐ अग्निरिति शिरसि' पढ़कर शिर का, 'ॐ मूर्द्धा इति ललाटे' से ललाट का, 'ॐ दिवः इति मुखे' से मुख का, 'ॐ ककुदिति हृदये' से हृदय का, 'ॐ पतिरिति नाभौ' से नाभि का,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति न्यासविधिं कृत्वा, ध्यायेत्।

[1]*ध्यानम्* –

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली
सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः।।१।।

'ॐ पृथिव्या इति कट्याम्' इस मन्त्र से कटि (कमर) का, 'अयमिति ऊर्वोः' से दोनों जाँघों का 'ॐ अपामिति जानुनोः' से जाँघ के नीचे जानुभाग (घुटनों) का, 'ॐ रेताठ.सीति गुल्फयोः' से पैर के ऊपर गुल्फ भाग का तथा 'ॐ जिन्वतीति पादयोः' से दोनों पैरों का स्पर्श करे।

इस प्रकार न्यास कर, भौम देवता का ध्यान करना चाहिए।

---

१. ध्यान की अनिवार्यता

ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यानं सर्वार्थसाधनम्।
ध्यानं विना भवेन्मूकः सिद्धिमन्त्रोऽपि पुत्रक !।।

-सां० तं०, ५ पटल, श्लोक १८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, जपं कुर्यात्।

भौममन्त्रः—

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः, ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपार्ठ.रेतार्ठ.सि जिन्वति।।

जप-संख्या—

अस्य जपसंख्या दशसहस्राणि। कलौ चत्वारिंशत्सहस्राणि। जपान्ते खदिर-समित्-तिल-पायस-घृतैर्दशांशहोमः।

इति वेदोक्त-भौममन्त्र-जपविधिः।

ध्यान— जिनका वस्त्र तथा शरीर लालवर्ण का है, जो मुकुट धारण किये हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं, जिनका वाहन मेष (भेड़ा) है, जो गदा, शक्ति तथा त्रिशूल धारण किये हुए हैं, ऐसे परम प्रशान्त, पृथ्वी के पुत्र श्री मङ्गल देवता मुझे वर देने वाले हों।

इस प्रकार से भगवान् मङ्गल का ध्यान कर, मानसिक षोडशोपचार से उनका पूजन करना चाहिए।

भौम का वैदिकमन्त्र—'ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तन्त्रोक्त–

भौममन्त्रजपविधिः

मन्त्रो यथा–

'ॐ हाँ हँ सः खं खः' इति षडक्षरो मन्त्रः।

विनियोगः–

अस्य श्रीमङ्गलमन्त्रस्य विरूपाक्षऋषिः,

पृथिव्याऽयम्। अपाठ.रेताठ्.सि जिन्वति।।

जप संख्या–इस मन्त्र को, दश हजार तथा कलियुग में ४० हजार संख्या में जप करना चाहिए। जप के बाद खैर की समिधा (लकड़ी), तिल, पायस तथा घृत से दशांश होम करना चाहिए।

इस प्रकार भौम मन्त्र की जप-विधि समाप्त।

मन्त्र– ॐ हाँ हँ सः खं खः' यह छह अक्षर का तन्त्रोक्त भौम मन्त्र है।

विनियोग– हाथ में जल लेकर 'अस्य श्रीमङ्गलमन्त्रस्य' से 'जपे विनियोगः' तक (इस मङ्गल मन्त्र के विरूपाक्ष ऋषि हैं, गायत्री छन्द तथा मङ्गल देवता हैं, अपनी मनोकामना की सिद्धि के लिए हम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गायत्रीच्छन्दः, मङ्गलो देवता, सर्वेष्टसिद्ध्यै जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः– ॐ विरूपाक्षऋषये नमः, शिरसि। ॐ गायत्रीच्छन्दे नमः, मुखे। ॐ मङ्गलदेवतायै नमो हृदये।

करन्यासः– ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हाँ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सः अनामिकाभ्यां नमः।

उसका जप करते हैं।) पढ़कर जल को किसी पात्र में अथवा पृथ्वी पर गिरा देना चाहिए।

ऋष्यादिन्यास– 'ॐ विरूपाक्षऋषये नमः, शिरसि' से शिर, 'ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः, मुखे' से मुख, 'ॐ मङ्गलदेवतायै नमो हृदये' इस मन्त्र से हृदय का स्पर्श करना चाहिए।

करन्यास– 'ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठे का, 'ॐ हाँ तर्जनीभ्यां नमः' से दोनों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ खं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ खः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः–

ॐ हृदयाय नमः। ॐ हाँ शिरसे स्वाहा। ॐ हँ शिखायै वषट्। ॐ सः कवचाय हुम्। ॐ खं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ खः अस्त्राय फट्।

हाथ की तर्जनी अँगुली का, 'ॐ हँ मध्यमाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की मध्यमा अँगुली का, 'ॐ सः अनामिकाभ्यां नमः' से अनामिका अँगुली का, 'ॐ खं कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की कानी अँगुली का, 'ॐ खः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ के तलवे का स्पर्श करे।

हृदयादिन्यास–इसी तरह 'ॐ हृदयाय नमः' से शुरू कर 'ॐ खः अस्त्राय फट्' तक पढ़कर प्रत्येक मन्त्र से हृदयादि न्यास करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्–

जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मै-
र्गदा-शूल-शक्तीर्वरं धारयन्तम्।
अवन्तीसमुत्थं सुमेषासनस्थं
धरानन्दनं रक्तवस्त्रं समीडे।।१।।

शिवपीठे मूलमन्त्रेण मूर्तिं प्रकल्प्य, अथवा त्रिकोणं ताम्रयन्त्रं प्रतिमां वा संस्थाप्य, प्राण-

---

इसके वाद 'जपाभं०' से 'रक्तवस्त्रं समीडे' तक श्लोक पढ़कर भौम देवता का ध्यान करे।

ध्यानमन्त्र का अर्थ– जपा-(अड़हुल) के फूल के समान लाल वर्ण वाले, शिव के स्वेद (पसीने) से उद्‌भूत, हाथ में कमल, गदा और शक्ति को धारण करनेवाले, अवन्ती देश में उत्पन्न, मेष वाहन (भेंड़ा पर सवार), भूमिपुत्र मङ्गल का मैं ध्यान करता हूँ।

शिव-पीठ पर मूल मन्त्र से मूर्ति को रखकर अथवा ताम्र का यन्त्र अथवा मङ्गल की प्रतिमा रखकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिष्ठां कृत्वाऽऽवाहनादि-पाद्यान्तैरुपचा-भौमं सम्पूज्य, आवरणपूजां कुर्यात्।

षट्कोणे आग्नेयादिकोणेषु मध्ये दिक्षु च। ॐ हृदयाय नमः १। ॐ हाँ शिरसे स्वाहा २। ॐ हँ शिखायै वषट् ३। ॐ सः कवचाय हुम् ४। ॐ खं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ खः अस्त्राय फट् ६। इत्यङ्गानि पूजयेत्।

तद्बाहे त्रिकोणे एकविंशतिकोष्ठेषु। ॐ मङ्गलाय

प्राण-प्रतिष्ठा कर, आवाहन, अर्घ्य, पाद्य द्वारा भौम की पूजा करे।

आवरण-पूजा विधि– षट्कोण में आग्नेयादि कोण तथा मध्य में 'ॐ हृदयाय नमः' से आरम्भ कर 'ॐ खः अस्त्राय फट्' पर्यन्त छहों कोणों पर अक्षत छिड़क कर, प्रत्येक अङ्गों का पूजन करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः १। ॐ भूमिपुत्राय नमः २। ॐ ऋणहर्त्रे नमः ३। ॐ धनप्रदाय नमः ४। ॐ स्थिरासनाय नमः ५। ॐ महाकायाय नमः ६। ॐ सर्वकर्मादरोधकाय नमः ७। ॐ लोहिताय नमः ८। ॐ लोहिताक्षाय नमः ९। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः १०। ॐ धरात्मजाय नमः ११। ॐ कुजाय नमः १२। ॐ भौमाय नमः १३। ॐ भूतिदाय नमः १४। ॐ भूमिनन्दनाय नमः १५। ॐ अङ्गारकाय नमः १६। ॐ यमाय नमः १७। ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः १८। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः १९। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः २०। ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः २१। इत्येकविंशतिभौमान्

उसके बाद त्रिकोण में इक्कीस (२१) स्थानों पर 'ॐ मङ्गलाय नमः' से प्रारम्भ कर, 'ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः' पर्यन्त २१ मन्त्रों से २१ भौमों का पूजन करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूजयेत्। तद्बाह्ये चतुरस्र-भूपुरे पूर्वादिषु। ॐ इं इन्द्राय नमः १। ॐ अं अग्नये नमः २। ॐ यं यमाय नमः ३। ॐ निं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ वां वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ ईं ईशानाय नमः ८। ऊर्ध्वम्-ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ९। अधः-ॐ अं अनन्ताय नमः १०। इति दिक्पालान् पूजयेत्।

तद्बहिः— ॐ वज्राय नमः १। ॐ शक्तये नमः २। ॐ दण्डाय नमः ३। ॐ खड्गाय नमः ४। ॐ पाशाय नमः ५। ॐ अङ्कुशाय नमः ६। ॐ

उसके बाद चौकोर स्थान पर पूर्वादि दिशाओं में 'ॐ इं इन्द्राय नमः १।' से आरम्भ कर 'ॐ अं अनन्ताय नमः १०।' पर्यन्त दश मन्त्रों से दशों दिक्पाल का पूजन करे।

उसके बाहर 'ॐ वज्राय नमः' से आरम्भ कर 'ॐ चक्राय नमः।' पर्यन्त दश मन्त्रों से दश आयुधों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गदायै नमः ७। ॐ त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पद्माय नमः ९। ॐ चक्राय नमः १०। इत्यायुधानि पूजयेत्।

इत्यमावरणपूजां कृत्वा, धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा-नीराजनैः सम्पूज्य, वक्ष्यमाणविधिनाऽर्घ्यं दत्त्वा, साष्टाङ्गं प्रणम्य, यथाविधि जपेत्।

पुरश्चरणम्–

अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

तथा च–

का पूजन करे।

इस प्रकार अक्षत से आवरण-पूजा कर धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा तथा आरती से पूजा करे, फिर आगे कहे गये मन्त्रों से अर्घ्य देकर साष्टांग प्रणाम करे। पश्चात् जप करे।

पुरश्चरण करना हो, तो छह लाख जप करे। शेष विधि पूर्ववत् करे। कहा भी है – भौम की शान्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रसलक्षं जपो होमः समिद्भिः खदिरस्य च।
इत्थं जपादिभिः सिद्धं स्वेष्टसिद्धौ प्रयोजयेत्।।

इति षड्वर्णात्मकं भौममन्त्रविधानम्।

भौमशान्तिः

आरम्भे स्वातियुते भौमवारे भौमव्रतमारभ्य, सप्तवारं भौमव्रतं कृत्वा, प्रतिभौमवारे यन्त्रे प्रतिमायां वा रक्तपुष्पा-ऽक्षतादिभिः सम्पूज्य, सप्तमे प्राप्ते शौच-स्नानादि-नित्यकर्म विधाय,

---

के लिए छह लाख जप तथा खदिर-खैर की लकड़ी से दशांश हवन करे। इस प्रकार जप से सिद्धि होने पर कामना की सिद्धि के लिए भौम मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। काम्य कर्मों के लिए षडक्षर भौम मन्त्र का विधान है। वह षडक्षर मन्त्र 'ॐ हाँ हँ सः खं खः' है।

जिस दिन भौम-शान्ति करनी हो, उसी दिन यजमान प्रातःकाल स्वाती नक्षत्र युक्त मंगलवार के दिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्धासने उपविश्य, देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम अमुककामनासिद्ध्यर्थं श्रीभौमग्रहप्रीतये भौम-शान्तिं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य, गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं ब्राह्मणवरणं च कुर्यात्। ताम्रपत्रे सौवर्णीं भौमप्रतिमां संस्थाप्य, रक्तवस्त्रेणाऽऽच्छाद्य, रक्त-चन्दना-ऽक्षतादि-षोडशोपचारैः[१], सम्पूज्य, कासारं निवेद्य,

---

से प्रारम्भ कर सात मङ्गल का व्रत करे प्रत्येक मंगलवार के दिन भौमयन्त्र में अथवा भौमप्रतिमा में लाल पुष्प, लाल अक्षत तथा लाल चन्दन, लाल वस्त्रादि से पूजन करता रहे। पश्चात् सातवें भौम के दिन शौच-स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर, शुद्ध

---

१. आवाहनाऽऽसने पाद्यमर्घ्यमाचनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्ध-माल्यादिभिः क्रमात्॥
धूपो दीपश्च नैवेद्यं नमस्कारः प्रदक्षिणा।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

कुशकण्डिकां कृत्वा, दधि-मधु-घृताक्ताभिः खादिरीभिः समिधाभिः 'ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाठ.रेताठ.सि जिन्वति।।' इति वैदिकमन्त्रेण, 'ॐ भौमाय नमः स्वाहा' इति मन्त्रेण वा 'ॐ भं भौमाय नमः स्वाहा' इति मूलमन्त्रेण वा अष्टोत्तरशताहुतिं जुहुयात्।

आसन पर बैठकर, 'देशकालौ संकीर्त्य' से 'भौमशान्तिं करिष्ये' तक पढ़कर सङ्कल्प करे। (देशकाल का नाम लेकर अमुक कामना की सिद्धि के लिए तथा भौम ग्रह की प्रीति के निमित्त मैं भौमशान्ति कर रहा हूँ।)

इस प्रकार सङ्कल्प कर गणपति का पूजन, पुण्याहवाचन तथा ब्राह्मण वरण करे। पश्चात् ताम्रपत्र में सोने की भौम-प्रतिमा (मूर्ति) स्थापित करे। रक्तवस्त्र से उसे ढँककर लाल चन्दन, लाल चावल आदि षोडशोपचार से प्रतिमा का पूजन कर, कासार (गेहूँ के आटे में गुड़ मिलाकर बना पदार्थ) का भोग लगावे फिर कुशकण्डिका कर दधि, मधु तथा घृत में डुबोयी हुई खैर की लकड़ी से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होमान्ते पूर्वोक्तां भौमप्रतिमां [१]प्रवाल-गोधूम-मसूर-रक्तवृष-गुड-सुवर्ण-रक्तवस्त्र-ताम्रादींश्च वेदविदुषे ब्राह्मणाय दद्यात्, ब्राह्मणभोजनान्ते व्रतविसर्जनं च कुर्यात्।

इति भौमशान्तिः।

'ॐ अग्निर्मूर्द्धा०' इस वैदिक मन्त्र से अथवा 'ॐ भौमाय नमः स्वाहा' इस पौराणिक मन्त्र से अथवा 'ॐ भं भौमाय नमः स्वाहा' इस मूलमन्त्र से १०८ आहुति से हवन करे।

हवन के बाद प्रथम पूजी गयी उस भौम-प्रतिमा को तथा उसके साथ प्रबाल (मूँगा), गेहूँ, मसूर, लाल बैल, गुड़, सोना, रक्त वस्त्र, लाल कनइल का फूल तथा ताँबे का दान भी वैदिक ब्राह्मण को देना चाहिए और फिर ब्राह्मण-भोजन कराकर व्रत का विसर्जन करना चाहिए।

---

१. प्रवाल-गोधूम-मसूरिकांश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम्।
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धनपुत्रादिप्रद–

मङ्गलव्रतविधानम्

स्कान्दे, मन्त्रमहोदधौ च–

मार्गशीर्षे वैशाखे वा शुक्लपक्षे चन्द्रतारादिबलान्विते भौमवासरे व्रतं प्रगृह्य वक्ष्यमाणविधिना संवत्सरपर्यन्तं कार्यम्।

तद्यथा–मङ्गलवारेऽरुणोदयवेलायामुत्थाय,

धन तथा पुत्र देनेवाले मङ्गलव्रत का विधान कहते हैं, जिसका विधान 'स्कन्द-पुराण' तथा 'मन्त्र- महोदधि' में इस प्रकार है– मार्गशीर्ष (अगहन) अथवा वैशाख के महीने में, शुक्लपक्ष में जब चन्द्रमा, तारा एवं नक्षत्र शुभकारक हों, उस मङ्गलवार के दिन व्रत का संकल्प लेकर आगे कहे गये विधि से एक वर्ष तक करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शौचविधिं विधाय, अपामार्गकाष्ठेन मौनपूर्वकं दन्तधावनं कृत्वा, नद्यादौ यथाविधि स्नात्वा, सन्ध्यादि-नित्यक्रियां समाप्य, शिवालये गृहे वा रक्तवाससी परिधाय, रक्तगोमयलिप्तमण्डले स्वासने प्राङ्मुख उद्ङ्मुखो वा उपविश्य, दक्षिणपार्श्वे रक्तचन्दन-

---

विधान इस प्रकार है– मङ्गलवार के दिन जब अरुणोदय वेला हो, तो चारपाई से उठकर शौचादि आवश्यक कृत्य कर, अपामार्ग की लकड़ी (चिचिड़ा) से मौन होकर दतुअन करे। पश्चात् नदी, तालाब अथवा कुएँ पर शास्त्रीय रीति से स्नान कर, सन्ध्या आदि नित्य कर्म का अनुष्ठान कर, किसी शिवमन्दिर अथवा घर पर लाल वस्त्र पहनकर, गोबर से लिपे हुए शुद्ध स्थान पर, अपने आसन पर, पूर्व मुख अथवा उत्तर मुख बैठकर दाहिनी ओर लाल चन्दन तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पादीनि सम्पाद्य, सपवित्रकरः, आचम्य प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य, मम जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाज्जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद् गोचराद्वा चतुर्थाऽष्टम-द्वादशाद्यनिष्टस्थान-स्थित-भौमसूचित-सूचयिष्यमाण[1]-सर्वानिष्ट—फलनिवृत्ति-द्वारा[2] तृतीयैकादशस्थानस्थितोत्तम-फलप्राप्त्यर्थमायुरारोग्य-

---

लाल पुष्प रखकर, हाथ में पवित्री धारण कर आचमन करे। फिर प्राणायाम कर, देश काल का

---

१. जन्मराशि से मंगल १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० तथा १२ वें स्थान में हो, तो अनिष्टकारक हैं। इससे रक्तविकार, चर्मरोग, परदेश गमन, शत्रुभय तथा मित्रों से मतभेद होता है।

२. जन्म राशि से मंगल ३, ६, ११ वें स्थान में हो, तो शुभकारक है। इसका फल -शत्रुनाश, ऐश्वर्य, भूमि तथा वस्त्र की प्राप्ति कराता है और राजा की कृपा, शरीर-नैरोग्य एवं सर्वत्र विजय दिलाने वाला होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुख-पुत्र-धन-धान्य-प्राप्त्यर्थं श्रीभौमदेवताप्रीत्यर्थं च भौमव्रतं करिष्ये। तदङ्गत्वेन न्यास-ध्यान-पूजाऽर्घ्य-दानादि च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च कुर्यात्।

प्रार्थना–

अद्य देवेश ! ते भक्त्या करिष्ये व्रतमुत्तमम्।
ऋण-व्याधि-विनाशाय धनसन्तानहेतवे ।।

इति सम्प्रार्थ्य, कर्ता स्वदेहे न्यासान् कुर्यात्।

उच्चारण कर 'मम जन्मराशेः' से 'करिष्ये' तक पढ़कर सङ्कल्प करे। पश्चात् गणपति-पूजन तथा पुण्याहवाचन शास्त्रीय रीति से करना चाहिए।

फिर 'अद्य देवेश–' से 'धनसन्तानहेतवे' तक मन्त्र पढ़कर मंगल देवता की प्रार्थना करे।

प्रार्थना– हे देवेश, मैं तुम्हारी भक्ति से इस उत्तम भौम व्रत को आज कर रहा हूँ। इस व्रत का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्यास –

ॐ मङ्गलाय नमः, अङ्घ्र्योः १। ॐ भूमिपुत्राय नमः, जान्वोः २। ॐ ऋणहर्त्रे नमः, ऊर्वोः ३। ॐ धनप्रदाय नमः, कट्योः ४। ॐ स्थिरासनाय नमः, गुह्ये ५। ॐ महाकायाय नमः, शिरसि ६। ॐ सर्वकर्माविरोधकाय नमः, बामबाहौ ७। ॐ लोहिताय नमः, दक्षिणबाहौ ८। ॐ लोहिताक्षाय नमः, कण्ठे ९। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः, मुखे १०। ॐ धरात्मजाय नमः, नासिकायाम् ११। ॐ कुजाय नमः, अक्ष्णोः १२। ॐ भौमाय नमः, ललाटे १३। ॐ भूतिदाय नमः, भ्रुवोर्मध्ये १४। ॐ भूमिनन्दनाय नमः, शिरसि १५। ॐ अङ्गारकाय नमः, शिखायाम् १६। ॐ यमाय नमः, सर्वाङ्गे १७।

उद्देश्य ऋण, व्याधि का नाश तथा धन और सन्तान की प्राप्ति है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः, बाहुद्वये १८। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः, मूर्द्धादिपादपर्यन्तम् १९। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः, चरणादि-मस्तकान्तम् २०। ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः, दिक्षु २१। ॐ आत्राय नमः, नाभौ २२। ॐ वक्राय नमः, वक्षसि २३। ॐ भूमिजाय नमः, मूर्ध्नि २४।

एवं न्यासं कृत्वा, ध्यायेत्।

ध्यानम्–

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्ति-शूल-गदाधरः।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्यात् धरासुतः।।

ऐसी प्रार्थना कर, अपने शरीर में 'ॐ मङ्गलाय नमः, अङ्घ्र्योः १।' इस मन्त्र से प्रारम्भ कर 'ॐभूमिजाय नमः, मूर्ध्नि २४।' इन २४ मन्त्रों से मन्त्र में लिखे गये स्थानों का स्पर्श करना चाहिए।

फिर न्यास कर, 'रक्तमाल्याम्बरधरः' श्लोक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

एवं ध्यात्वा, अर्घ्यं संस्थाप्य, पूजां कुर्यात्। तद्यथा-त्रिकोणे स्थण्डिले यथाविधि ताम्रकलशं संस्थाप्य, तत्र एकविंशतिकोष्ठाख्यं त्रिकोणं ताम्रयन्त्रमथवा रक्तचन्दननिर्मितां शूलशक्तिगदाधरां मेषमारूढां भौमप्रतिमां संस्थाप्य, तत्र प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, आवाहनं कुर्यात्।

आवाहनम् –

ॐ एह्येहि भगवन् ब्रह्मन्नङ्गारक महाप्रभो।
त्वयि सर्वं समायातं त्रैलोक्यं सचराऽचरम् ॥१॥

पढ़कर मङ्गल का ध्यान करना चाहिए। (अर्थ–लाल वर्ण की माला तथा लाल वस्त्र धारण करने वाले, शक्ति, शूल तथा गदा को धारण किये हुए, चार भुजा वाले, मेष वाहन पर सवार, पृथ्वीपुत्र मङ्गल हमें वर देने वाले हों।)

इस प्रकार ध्यान कर अर्घ्य हाथ में लेकर पूजा करे। पूजा की विधि इस प्रकार है– त्रिकोण अथवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्तिं दुरासदम् ।
रुद्ररूपमनिर्देश्यं वक्रं च रुधिरप्रियम् ॥२॥
ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपार्ठ.रेतार्ठ.सि जिन्वति ।।३।।
ॐ अङ्गारकाय विद्महे.शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।।४।।

इति भौममावाह्य, पाद्यादिरक्तपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य, आवरणपूजां कुर्यात् ।

स्थण्डिल में शास्त्रीय रीति से ताम्र कलश को स्थापन कर, इक्कीस कोठे का त्रिकोण ताम्र यन्त्र अथवा रक्त चन्दन की बनायी गयी शूल, शक्ति तथा गदा को धारण करने वाली, मेष वाहन पर अवस्थित्त भौमप्रतिमा का स्थापन करे। उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर, 'ॐ एह्येहि भगवन् –' इस मन्त्र से प्रारम्भ कर 'तन्नो भौमः प्रचोदयात्' इन ४ पृथक्-पृथक् भौम मन्त्रों से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवरणपूजा–

षट्कोणे आग्नेयादिकोणकेसरेषु मध्ये दिक्षु च। ॐ ह्राँ हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रं ह्रं ह्रं कवचाय हुम् ४। ॐ ह्रंस नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ख्रं ख्रः अस्त्राय फट्। इति पूजयेत्।

ततः एकविंशतिकोष्ठेषु–ॐ मङ्गलाय नमः, पादौ पूजयामि १। ॐ भूमिपुत्राय नमः, जानुनी पूजयामि २। ॐ ऋणहर्त्रे

भौम देवता का आवाहन करना चाहिए। फिर आवाहन कर पाद्य, रक्त पुष्प आदि षोडशोपचार से प्रतिमा का पूजन कर आवरण-पूजन करना चाहिए। षट्कोण के, आग्नेय कोण केसर के मध्य में तथा दशों दिशाओं में 'ॐ हाँ हृदयाय नमः ' मन्त्र से आरम्भ कर 'ॐ खं खः अस्त्राय फट्'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः, ऊरू पूजयामि ३। ॐ धनप्रदाय नमः, कटी पूजयामि ४। ॐ स्थिरासनाय नमः, गुह्यं पूजयामि ५। ॐ महाकायाय नमः, उरः पूजयामि ६। ॐ सर्वकर्माविरोधकाय नमः, बामबाहुं पूजयामि ७। ॐ लोहिताय नमः, दक्षिणबाहुं पूजयामि ८। ॐ लोहिताक्षाय नमः, कण्ठं पूजयामि ९। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः, मुखं पूजयामि १०। ॐ धरात्मजाय नमः, नासिकां पूजयामि ११। ॐ कुजाय नमः, नेत्रद्वयं पूजयामि १२। ॐ भौमाय नमः, ललाटं पूजयामि १३। ॐ भूतिदाय नमः, भ्रुवोर्मध्यं पूजयामि १४। ॐ भूमिनन्दनाय नमः, मस्तकं पूजयामि १५। ॐ अङ्गारकाय नमः, शिखां पूजयामि १६। ॐ यमाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि १७। ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः, बाहुद्वयं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजयामि १८। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः, मूर्द्धादिपादपर्यन्तं पूजयामि १९। ॐ वृष्ट्यपहर्त्रे नमः, चरणादि-मस्तक-पर्यन्तं पूजयामि २०। ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः, दिशः पूजयामि २१। इति पूजयेत्।

ततः तद्बाह्यत्रिकोणेषु—ॐ वक्राय नमः १। ॐ आराय नमः २। ॐ भूमिजाय नमः ३। इति

मन्त्र पर्यन्त छह मन्त्रो से प्रतिमा की पूजा करनी चाहिए।

इसके बाद इक्कीस कोठों में 'ॐ मङ्गलाय नमः, पादौ पूजयामि' से लेकर 'सर्वकामफलप्रदाय नमः, दिशः पूजयामि २१।' तक २१ मन्त्रों से २१ कोष्ठों में अक्षत से पूजन करना चाहिए।

इसके बाद उसके बाहर त्रिकोण में 'ॐ वक्राय नमः १।' से आरम्भ कर 'ॐ भूमिजाय नमः ३।' पर्यन्त तीनों मन्त्रों से अक्षत छोड़ना चाहिए। इसके बाद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजयेत्। तद्बहिरष्टदले पूर्वादिक्रमेण। ॐ ब्राह्म्यै नमः १। ॐ माहेश्वर्यै नमः २। ॐ कौमार्यै नमः ३। ॐ वैष्णव्यै नमः ४। ॐ वाराह्यै नमः ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः ६। ॐ चामुण्डायै नमः ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८। इति मातृकाः पूजयेत्।

तद्बाह्ये भूपुरे पूर्वादिक्रमेण— ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ निर्ऋतये नमः ४।

उसके बाहर अष्टदल पर पूर्वादि दिशाओं के क्रम से 'ॐ ब्राह्म्यै नमः १।' मन्त्र से लेकर 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८।' पर्यन्त ८ मन्त्रों से मातृका का पूजन करना चाहिए।

इसके बाद उसके बाहर भूपुर में पूर्वादिक्रम से 'ॐ इन्द्राय नमः १।' से प्रारम्भ कर 'ॐ अनन्ताय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ वरुणाय नमः ५। ॐ वायवे नमः ६। ॐ कुबेराय नमः ७। ॐ ईशानाय नमः ८। ईशान-पूर्वयोर्मध्ये-ॐ ब्रह्मणे नमः ९। निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये-ॐ अनन्ताय नमः १०। इति दशदिक्पालान् पूजयेत्।

तद्बाह्ये— ॐ वज्राय नमः १। ॐ शक्तये नमः २। ॐ दण्डाय नमः ३। ॐ खड्गाय नमः ४। ॐ पाशाय नमः ५। ॐ अङ्कुशाय नमः ६। ॐ गदायै नमः ७। ॐ त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पद्माय नमः ९। ॐ चक्राय नमः १०। इत्यस्त्राणि पूजयेत्।

नमः १०।' पर्यन्त दश मन्त्रों से दश दिक्पाल का पूजन करना चाहिए।

फिर उसके बाहर 'ॐ वज्राय नमः १।' से लेकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्थमावरणपूजां कृत्वा, धूप-दीप-गोधूमान्न-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा-नीराजनादिभिः सम्पूज्याऽर्घ्यं दद्यात्। तद्यथा-जलपूर्णे ताम्रपात्रे रक्तगन्ध-रक्तपुष्पाऽक्षत-फलानि निक्षिप्य, जानुभ्यामवनीं गत्वा,

ॐ भूमिपुत्र ! महातेज ! स्वेदोद्भव ! पिनाकिन ! ।
श्रेयोऽर्थी त्वां प्रपन्नोऽहं गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥१॥

'ॐ चक्राय नमः १०।' पर्यन्त दस मन्त्रों से अस्त्र का पूजन करना चाहिए।

इस प्रकार अक्षत से आवरण-पूजा कर धूप, दीप, गेहूँ के बने हुए नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा तथा आरती से पूजन कर, अर्घ्य देना चाहिए।

अर्घ्यदान विधि– जल से भरे हुए ताँबे के बरतन में रक्त गन्ध, रक्त पुष्प, रक्त अक्षत तथा फल से युक्त कर, घुटनों के बल पृथ्वी पर बैठकर मंगल की प्रार्थना करे–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसीद देवदेवेश ! विघ्नहारिन् ! धरात्मज ! ।
गृहाणाऽर्घ्यं मया दत्तं मम शान्तिप्रदो भव ।।२।।
रक्त-प्रवालसङ्काश ! जपाकुसुमसन्निभ !।
महीसुत महाबाहो ! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते ।।३।।

इत्यर्घ्यं दत्त्वा, पूर्वोक्तैर्नामभिः प्रणम्य, एक-विंशतिप्रदक्षिणाः कृत्वा, साष्टाङ्गं प्रणमेत् ।

हे भूमिपुत्र, हे महातेजस्वी, शङ्कर के स्वेद से उत्पन्न भगवान् भौम, हम अपने कल्याण के लिए आपकी शरण में हूँ। आपको नमस्कार है, इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिए।।१।। हे विघ्न को दूर करने वाले देवदेवेश मङ्गल, हमारे दिये गये इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिए तथा हमारे अरिष्टों की शान्ति कीजिए।।२।। लाल मूँगे के तथा जपाकुसुम (अड़हुल के फूल) के समान लाल वर्ण वाले, महाबाहो, महीसुत, तुम्हें नमस्कार है, तुम मेरे इस अर्घ्य को ग्रहण करो।।३।।

इस प्रकार अर्घ्य देकर पूर्वोक्त इक्कीस नामों से प्रणाम तथा प्रदक्षिणा कर साष्टाङ्ग प्रणाम करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः खदिराङ्गारकेन स्वपुरतः ऋणरेखात्रयं समं कृत्वा, वामपादेन प्रमार्जयेत्।

तत्र मन्त्रौ–

दुःख- दौर्भाग्यनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे ।
कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत् प्रमार्ज्म्यहम् ।।१।।
ऋणदुःखविनाशाय नमोऽभीष्टार्थसिद्धये ।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्भवाः ।।२।।

ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा, ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रेण प्रार्थनां कुर्यात्।

इसके बाद खैर की लकड़ी को जलाकर, उसका अंगारा बनाकर, उससे अपने आगे तीन ऋण की रेखा समान खींचकर बाँयें पैर से उस रेखा को मिटानी चाहिए। उसका मन्त्र है– 'दुःख-दौर्भाग्यनाशाय०' से लेकर 'जन्मत्रयोद्भवाः।' पर्यन्त।।१-२।।

इसके बाद पुष्प से युक्त अञ्जलि करके 'ऋणमोचन मङ्गल-स्तोत्र' से भौम देवता की प्रार्थना करनी चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्

श्रीमङ्गलाय नमः

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।२।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।३।।

---

१. मङ्गल, २. भूमिपुत्र, ३. ऋणहर्ता, ४. धनप्रद, ५. स्थिरासन, ६. महाकाय, ७. सर्वकमावरोधक, ।।१।। ८. लोहित, ९. लोहिताङ्ग, १०. सामगानां कृपाकर (सामग ब्राह्मणों के ऊपर कृपा करने वाले), ११. धरात्मज, १२. कुज, १३. भौम, १४. भूतिद (ऐश्वर्य को देने वाले), १५. भूमिनन्दन (पृथ्वी को आनन्द देने वाले), ।।२।। १६. अङ्गारक, १७. यम, १८. सर्वरोगापहारक अर्थात् सम्पूर्ण रोगों को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ।।४।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।५।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ।।६।।

दूर करने वाले, १९. वृष्टिकर्ता (वृष्टि करने वाले), २०. वृष्टिहर्ता (वृष्टि को रोक कर अकाल डालने वाले) तथा २१. सर्वकामफलप्रद (सम्पूर्ण कामनाओं के फल को देने वाले)।।३।। मङ्गल के उपर्युक्त (अर्थात् इक्कीस) नाम को जो व्यक्ति श्रद्धा से पढ़ते हैं, उनको ऋण-कर्ज नहीं होता और वे लोग शीघ्र ही धन को प्राप्त करते हैं।।४।। धरणी (पृथ्वी) के गर्भ से उत्पन्न, बिजली के समान कान्ति से युक्त, शक्ति को धारण करने वाले, कुमार मङ्गल को मैं प्रणाम करता हूँ।।५।। मनुष्यों को इस मङ्गल-स्तोत्र का पाठ हमेशा करना चाहिए। ऐसे लोग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अङ्गारक ! महाभाग ! भगवन् ! भक्तवत्सल ! ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ।।७।।
ऋणरोगादि-दारिद्र्यं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः ।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।।८।।
अतिवक्र ! दुराराध्य ! भोगमुक्तजितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।९।।
विरिञ्चि-शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ? ।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ।।१०।।

इस मङ्गल-स्तोत्र का पाठ करते हैं, उन्हें मङ्गल के अरिष्ट की थोड़ी सी भी पीड़ा नहीं होती।।६।। हे अङ्गारक, महाभाग, भगवान् , भक्तवत्सल, भौम ! आपको हम प्रणाम करते हैं। हमारे सम्पूर्ण ऋण (कर्ज) को आप दूर कीजिए।।७।। ऋण, रोग, दरिद्रता तथा अन्य अपमृत्यु, भय, क्लेश तथा मनस्ताप मेरे सदैव दूर हो जायें।।८।। अतिवक्र, दुराराध्य भगवान् मङ्गल, आप प्रसन्न होने पर साम्राज्य दे सकते हो, पर नाराज होने पर तुरन्त ही साम्राज्य को नष्ट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः ।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गव प्रोक्तम् – ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्।

भी कर देते हो॥९॥ हे महाराज ! आप नाराज होने पर ब्रह्मा, इन्द्र तथा विष्णु के भी साम्राज्य- सम्पत्ति को नष्ट कर सकते हो फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है। इस प्रकार के पराक्रम से युक्त होने के कारण आप महाबलवान् तथा महाराज हैं॥१०॥ हे भगवन् ! आप मुझे पुत्र दो, धन दो, मैं आपके शरण हूँ। ऋण, दारिद्र्य, दुःख तथा शत्रु के भय से मुझे मुक्त करो॥ ११॥ इन बारह श्लोकों वाले इस 'ऋणमोचन मङ्गल-स्तोत्र' से जो लोग मङ्गल की स्तुति करते हैं, उनको प्रचुर-भरपूर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, वह इस पृथ्वीतल में दूसरा कुबेर तथा सदा युवा बना रहता है॥१२॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' भाषाटीका में, स्कन्दपुराण में आये हुए, भार्गव-द्वारा कहा गया ऋणमोचन मङ्गल-स्तोत्र समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अङ्गारकस्तोत्रम्

विनियोगः –

अस्याऽङ्गारकस्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्रीच्छन्दः, भौमप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः ।
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः ।।१।।
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः ।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः ।।२।।

विनियोग– हाथ में जल लेकर 'अस्याङ्गारक-स्तोत्रस्य०' से लेकर 'जपे विनियोगः ' तक पढ़कर जल छोड़ दे। अङ्गारक, शक्तिधर, लोहिताङ्ग, धरासुत, कुमार, मङ्गल, भौम, महाकाय, धनप्रद अर्थात् धन देने वाले।।१।। ऋणहर्ता, दृष्टिकर्ता, रोगकृत्, रोगनाशक, विद्युत्प्रभ,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः ।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्माविबोधकः ।।३।।
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः ।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत् सततं नरः ।।४।।
ऋणं तस्य हि दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति ।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम् ।।५।।

व्रणकर, कामद, धनहृत् , कुज,।।२।। सामगान से प्रसन्न होने वाले, रक्त वस्त्र वाले, लाल आँख वाले, लोहित, रक्त वर्ण, सम्पूर्ण कर्मों को बताने वाले,।।३।। लाल माला पहनने वाले, सोने का कुण्डल पहनने वाले, ग्रहनायक, मङ्गल के इतने नामों को जो लोग सदैव पढ़ते हैं।।४।। उनका ऋण, दुर्भाग्य तथा दारिद्र्य नष्ट हो जाता है। अङ्गारक-स्तोत्र का पाठ करने वाला पुरुष, विपुल धन,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नाऽत्र संशयः ।
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः ।।६।।
सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम् ।।७।।

इति श्रीस्कन्दपुराणेऽङ्गारकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

उत्तम स्त्री,।।५।। वंश को प्रकाशित करने वाला लड़का प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है। जो लोग अनेक पुष्पों से भौमवार के दिन भौम की पूजा करते हैं ।।६।। उनकी सम्पूर्ण ग्रहों की पीड़ा नष्ट हो जाती है।।७।।

इस प्रकार 'शिवदत्ती' भाषाटीका में स्कन्दपुराणान्तर्गत अङ्गारक-स्तोत्र समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलकवचम्

विनियोगः –

अस्य श्रीअङ्गारककवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, अङ्गारको देवता, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम् –

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली
सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ॥१॥

दाहिने हाथ में जल लेकर 'अस्य श्रीअङ्गारक०' से 'जपे विनियोगः' तक वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। हाथ में लाल फूल लेकर 'रक्ताम्बरो०' से 'वरदः प्रशान्तः' तक श्लोक पढ़कर भगवान् मङ्गल का ध्यान करे। लाल वस्त्र धारण किये हुए, लाल शरीर वाले, किरीट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवचम् –

अङ्गारकः शिरो रक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः ।
श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः ।।२।।
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः ।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा ।।३।।

धारण करने वाले, चार भुजा वाले, मेष (भेंड़ा) पर सवार, गदाधारी, पृथ्वी के पुत्र, शक्ति तथा शूल धारण किये हुए, शान्त, वरदान देने वाले मङ्गल सदा मेरा कल्याण करें।।१।।

पश्चात् – 'अङ्गारकः शिरो' से 'सत्यमेतन्न संशयः' तक मङ्गल-कवच का पाठ करे।

मेरे मस्तक की रक्षा अङ्गारक करें। मुख की धरणी-सुत तथा रक्ताम्बर भौंहों की, रक्तलोचन नेत्र की रक्षा करें।।२।।

नासिका की शक्तिधर, मुख की रक्तलोचन रक्षा करें। उसी प्रकार मेरे भुजा की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं पातु रोहितः ।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः ।।४।।
जानुजङ्घे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा ।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः ।।५।।
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ।
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम् ।।६।।

रक्तमाली तथा हाथ की शक्तिधर रक्षा करें।।३।।

मेरे वक्ष की वराङ्ग, हृदय की रोहित रक्षा करें तथा ग्रहराज कटि की एवं धरासुत-मंगल मुख की रक्षा करें।।४।। कुज मेरे जानु एवं जङ्घा की और भक्तप्रिय पैर की तथा मेषवाहन सभी अंगों की रक्षा करें।।५।।मङ्गल का यह दिव्य कवच, समस्त शत्रुओं को नष्ट करने वाला, भूत, प्रेत, पिशाच आदि को नाश करने वाला एवं समस्त सिद्धि-प्रदायक है।।६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम्।
भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।
रोगबन्ध–विमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः।।७।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेऽङ्गारककवचं सम्पूर्णम् ।

●

और समस्त रोग आदि का नाशक तथा सभी सम्पत्ति का प्रदायक है। मनुष्यों को यह मंगलकवच भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाला और सौभाग्य देने वाला तथा रोग एवं कारागार (जेल) आदि बन्धन से छुड़ाने वाला है, इसमें किसी प्रकार का भी सन्देह नहीं है।।७।।

इस प्रकार 'शिवदत्ती' भाषाटीका में मार्कण्डेयपुराण में कहा हुआ मङ्गलकवच समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलव्रत-विधानम्

इति भौमं सम्प्रार्थ्य, पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, वर्षावधि एकभक्तव्रतं कृत्वा, समाप्तौ सर्वतोभद्रमण्डले कलशोपरि सौवर्णभौमप्रतिमायां भौमं सम्पूज्य, अग्निं संस्थाप्य, अष्टोत्तशतं तिलहोमं कृत्वा, होमशेषं समापयेत्। ततः कलशोदकेन सपत्नीकं यजमानमभिषिञ्चेत्।

इस प्रकार भौम की प्रार्थना कर, पुष्पाञ्जलि देकर, एक वर्ष तक प्रति मङ्गलवार को व्रत रहना चाहिए। और एक समय एक ही अन्न (गेहूँ का चूरमा तथा गेहूँ का ठोकवा वगैरह) भोजन करना चाहिए। व्रतसमाप्ति (अर्थात् व्रत के अन्त में उद्यापन) के दिन सर्वतोभद्रमण्डल पर स्थित कलश पर सुवर्णनिर्मित भौम की पूजा करे तथा अग्निस्थापन कर १०८ बार तिल का हवन करना चाहिए। पश्चात् कलश के जल से सपत्नीक (स्त्री-सहित) यजमान को अभिषिञ्चन करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमानः पीठादिकमाचार्याय दत्त्वा, पञ्चाशत्ब्राह्मणान् गोधूमान्नेन भोजयेत्। ततः बन्धु-मित्रैः सह स्वयं भुञ्जीत।

इति मङ्गलव्रतविधानं समाप्तम्।

●

यजमान पीठ आदि तथा भौम के लिए चढ़ायी हुई सामग्री आचार्य को देवे और पचास ब्राह्मणों को गेहूँ की बनी हुई सामग्री (पूड़ी, कचौड़ी, लड्डू आदि) से भोजन करावे। फिर स्वयं अपने बन्धु-बान्धवों एवं इष्ट-मित्रों के साथ भोजन करे।

इस प्रकार शिवदत्तमिश्र शास्त्रिकृत भाषाटीका में मङ्गलव्रत-विधान समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलवारव्रत-कथा

सूत उवाच

पूजितो देवदैत्यैस्तु मङ्गलो मङ्गलप्रदः।
गौतमेन पुरा पृष्टो लोहिताङ्गो महाग्रहः।।१।।

गौतम उवाच

कथयस्व महाभाग ! गुह्यो पूजनमुत्तमम्।
मन्त्रमाराधनं दानं सर्वपापप्रणाशनम्।।२।।
रूपं सुवर्णसङ्काशं वाहनायुधसंयुतम्।
येन पूजितमात्रेण जायते सुखमुत्तमम्।।३।।

सूत जी ने कहा कि, मङ्गल प्रदान करने वाले मगंल की जब देवता एवं दैत्यों ने पूजन कर लिया तब उस लोहिताङ्ग महाग्रह से गौतम ने पूछा।।१।।

गौतम ने कहा– हे महाभाग, गुप्त उत्तम पूजन, मन्त्र, आराधना तथा समस्त पापों को नष्ट करने वाला दान कहिए। सुवर्ण के समान रूप, वाहन और आयुधों सहित जिनके पूजन मात्र से ही उत्तम सुख उत्पन्न हो।।२–३।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्षाणां कालेनैव फलप्रदम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् ।।४।।
सर्वसौभाग्यदं देवं धातुः पातकनाशनम् ।
सर्वयज्ञफलं येन सर्वकामफलप्रदम् ।।५।।
तपसां जपदानानां फलं चैव तु लभ्यते ।
तद्-व्रतं ब्रूहि देवेश ! लोहिताङ्ग ! महाग्रह ! ।।६।।
यस्मिन्नाराधिते मर्त्यः सर्वसौभाग्यवान् भवेत् ।

तथा सभी पापों को नष्ट करने वाला, सभी व्याधियों का विनाशक और थोड़े ही समय में जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों फल को देनेवाला हो।।४।। उसी प्रकार समस्त सौभाग्य-प्रदायक एवं साधक के सभी पातकों को नष्ट करने वाला, समस्त यज्ञों का फल प्रदान करने वाला तथा सभी कामरूपी फल को देनेवाला हो।।५।। हे लोहिताङ्ग महाग्रह ! ऐसा व्रत मुझे सुनाइए, जिससे कि सभी जप, तप एवं दान का फल प्राप्त हो।।६।। और उसकी आराधना करने से मनुष्यों को सभी सौभाग्य प्राप्त हो।

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गल उवाच

शृणु विप्र ! महाभाग ! सर्वज्ञ ! ऋषिसत्तम ! ।।७।।
व्रतं च पूजनं दानं प्रख्यातं भुवनत्रये ।
आसीत् पूर्वं हि सर्वज्ञो नन्दको ब्राह्मणोत्तमः ।।८।।
तस्य भार्या सुनन्दा च नाम्ना ख्याता सुलोचना ।
तस्याऽपत्यं च सञ्जातं वृद्धत्वान्न कदाचन ।।९।।

उसके बाद मंगल भगवान् ने कहा कि, हे सर्वज्ञ, महाभाग, श्रेष्ठ ऋषि गौतमजी, मैं कहता हूँ आप सावधानी से सुनिए।।७।। यह व्रत, पूजन, दान तीनों लोक में प्रसिद्ध है। पूर्व समय में नन्दक नाम का एक ब्राह्मण था, जो कि सर्वज्ञ अर्थात् सब-कुछ जानने वाला था।।८।। उसकी सुन्दर नेत्र वाली सुनन्दा नाम की एक स्त्री थी। वह ब्राह्मण वृद्ध हो गया परन्तु उसे कोई सन्तान नहीं हुई।।९।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेनाऽन्यस्य सुता पुण्या गृहीत्वा पोषिता ध्रुवम् ।
ब्राह्मणस्य कुले जाता सुरूपा गुणसंयुता ॥१०॥
सर्वलक्षणसम्पन्ना प्रयत्नेनैव गौतम! ।
पुरा जनौ तया चाऽहमेकभावेन पूजितः ॥११॥
सा पुत्री स्वगृहे नीत्वा ब्राह्मणेनैव पालिता ।
नित्यं हि स्रवते तस्या अष्टाङ्गं कनकं बहु ॥१२॥

अतः किसी दूसरे की लड़की को उन्होंने गोद लिया और अपने घर उसका पालन-पोषण करने लगे। और वह कन्या भी ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होने के कारण अत्यन्त सुन्दर एवं गुणवती थी॥१०॥ एवं उस कन्या में सभी उत्तम लक्षण थे। हे गौतम, पूर्व जन्म में उसने मुझे प्रयत्न के साथ एक भाव से पूजा था॥११॥ उस पुत्री का वह ब्राह्मण अपने घर में पालन करने लगा और उसका अष्टाङ्ग नित्य प्रतिदिन बहुत-सा सुवर्ण दिया करता था। उस सोने से वह ब्राह्मण बहुत धनी हो गया और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

 Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्सुवर्णेन विप्रोऽसौ धनाढ्यो मदगर्वितः ।
कोटिकोटीश्वरो जातो राजते भूमिमण्डले ॥१३॥
दृष्टा नन्दकविप्रेण दशवर्षा वरार्थिनी ।
विवाहार्थं च विप्राय दत्ता सोमेश्वराय च ॥१४॥
वेदोक्तविधिना तस्या विवाहमकरोत्तदा ।
वर्षैः कतिपयैर्विप्रः स्वां पत्नीं प्रौढयौवनाम् ॥१५॥
आदाय श्वसुरगृहान्निर्गतः शुभवासरे ।
स्वदेशमार्गेण ततो व्रजन् प्राप्तिस्त्वहर्निशम् ॥१६॥

उसे बहुत मद (घमण्ड) एवं अभिमान हो गया तथा कोट्यधीश्वर होकर इस पृथ्वी पर राजा के समान रहने लगा॥१२-१३॥ उसके बाद नन्दक ने जब वह कन्या दस वर्ष की हो गयी और उसे विवाह योग्य जान, सोमेश्वर ब्राह्मण के साथ उसका विवाह कर दिया॥१४॥ वैदिक विधि से विवाह हो जाने के बाद कुछ वर्षों के पश्चात् जब वह पूर्ण युवती हो गई तब सोमेश्वर उसे ससुराल से शुभ दिन में उसे विदा कराकर अपने घर की ओर चल पड़ा और मार्ग में उसे रात्रि हो गयी॥१५-१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निशान्ते दुर्गमे घोरेऽरण्ये पर्वतमध्यमे ।
नन्दकोऽपि वने तस्मिन् महालोभेन भावितः ॥१७॥
प्रच्छन्नश्चोररूपेण धारितुं विट्पतिं स्वकम् ।
भ्रमञ्जघान विजनं दृष्ट्वा निष्करुणो भृशम् ॥१८॥
तं पतिं मृतमालोक्य सा नारी शोकपीडिता ।
पतिना सह विप्रेन्द्र ! मरणे कृतनिश्चया ॥१९॥

वे लोग उस भयङ्कर रात्रि में पर्वतों के मध्य पहुँचे, उसी समय उसका श्वसुर नन्दक भी उसे लूटने के लोभ से वहाँ पहुँचा॥१७॥ वह अपने दामाद को मारने के लिए चोर बनकर छिपा हुआ था। और उस निर्दयी दुष्ट ने इधर-उधर घूम उसे अकेला देखकर जान से मार दिया॥१८॥ पति को मृत देखकर उसकी स्त्री अत्यन्त दुःखित हुई। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ, उसने भी अपने पति के साथ अपने प्राणत्याग का निश्चय कर लिया॥१९॥ अपने पति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वपतिं तन्मयं विश्वं चिन्तयती पदे-पदे ।
पतिं प्रदक्षिणीकृत्य चितायाश्च समीपतः ॥२०॥
प्राप्य यावत् प्रविशति पतिलोकमभीप्सती ।
तस्मिन् क्षणे च तुष्टोऽहं वरार्थं तामचोदयम् ॥२१॥
वरं ब्रूहि महाभागे ! यत्ते मनसि वर्तते ।
इति श्रुत्वा ततो वव्रे सा नारी पतिमानसा ॥२२॥

ब्राह्मण्युवाच

यदि तुष्टोऽसि मे देव ! तर्हि जीवतु मे पतिः ।

तथा पतिमय विश्व का पद-पद पर याद कर पति की प्रदक्षिणा की और चिता के समीप जा, उसमें प्रवेश करना चाहती ही थी कि इससे मैं पतिलोक को प्राप्त हो जाऊँगी। उसी समय मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उससे वर माँगने के लिए कहा॥२०-२१॥ कि, हे महाभागे, तू अपना अभीष्ट वर माँग ले, यह सुनकर उस स्त्री ने मन से अपने पति को माँगा॥२२॥

ब्राह्मणी ने कहा—हे देव, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गल उवाच

अजरोऽप्यमरः प्राज्ञस्तव भर्ता भविष्यति ॥२३॥

अन्यं याच महासाध्वि ! वरं त्रिभुवनोत्तमम् ।

ब्राह्मण्युवाच

यदि तुष्टोऽसि मे देव ! ग्रहाणामधिपेश्वर ! ॥२४॥

ये त्वां स्मरन्ति देवेशं रक्तचन्दनचर्चितम् ।

रक्तपुष्पैश्च सम्पूज्य प्रत्यूषे भौमवासरे ॥२५॥

तो मेरा पति जीवित हो जाय। यह सुनकर मंगल भगवान् ने कहा कि, तेरा पति अजर, अमर और परम विद्वान् हो जायेगा॥२३॥ इसमें तो कहना ही क्या? हे साध्वी, इसके सिवा तीनों लोकों में उत्तम और कोई वरदान माँग। इस प्रकार सुन उस ब्राह्मणी ने कहा कि, हे ग्रहों के स्वामी, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो जो कोई भी चन्दन-चर्चित आपकी रक्त वर्ण के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बन्धनं व्याधिरोगाश्च कदाचिन्नोपजायताम् ।
न च सर्पा-ऽग्नि-शत्रुभ्यो भयं च स्वजनैः सह ॥२६॥
न वियोगो महीपुत्र ! भक्तानां सौख्यदो भव ।

मङ्गल उवाच

एकविंशतिभौमांश्च यो मद्भक्तो जितेन्द्रियः ॥२७॥
एकाहारं सितान्नेन चतुर्दीपान्विते गृहे ।
अर्घ्यैश्च मङ्गलैर्मन्त्रैर्वेदपौराणिकोद्भवैः ॥२८॥

पुष्प से मंगलवार को प्रातःकाल पूजन व स्मरण करे, उन्हें बन्धन, रोगव्याधि कभी न हो और उसे तथा उसके परिवार को सर्प, अग्नि एवं बैरियों से भय न हो। हे पृथ्वीपुत्र, उनका कभी भी अपने स्वजनों से वियोग न हो तथा अपने भक्तों के लिए सुख देनेवाले हों, यही वर मुझको दीजिए।

उसके बाद मंगल भगवान् ने कहा– जो मेरा भक्त जितेन्द्रिय होकर श्वेत अन्न से एकबार भोजन कर, चार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युवानं रक्तमनड्वाहं सर्वोपस्करसंयुतम् ।
स्वशक्त्या भोजयेद्विप्रान्दातव्यंचहिरण्यकम् ॥२९॥
तस्य वै ग्रहपीडा च न भवेत्तु कदाचन ।
भूत-वेताल-शाकिन्यो न भवन्ति च हिंसकाः ॥३०॥
दारिद्र्यं नश्यते तस्य पुत्र-पौत्रैश्च वर्धते ।
एवमुक्त्वा च तत्रैव मङ्गलोऽपि दिवं गतः ॥३१॥

दीप युक्त मण्डल पर अर्घ्य-सहित वैदिक एवं पौराणिक मंगल मन्त्रों-सहित इक्कीस मंगलवार व्रत करे॥२४-२८॥ तथा सभी उपस्कर के साथ लाल रंग का युवा बैल सुवर्ण के सहित दान करे तथा शक्ति के अनुसार ब्राह्मणभोजन करावे॥२९॥ उसे ग्रहपीड़ा कभी भी नहीं होगी, उसे भूत, प्रेत, बेताल, शाकिनी कभी भी मार नहीं सकतीं॥३०॥ उसका दारिद्र्य नष्ट हो जाता है और वह पुत्र एवं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं व्रतं समाख्यातं सर्वसौख्यप्रदायकम्।
इदं व्रतं करिष्यन्ति तेषां पीडा न जायते ॥३२॥
स्त्रीभिर्व्रतं प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषतः।
तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशयः ॥३३॥

इति श्रीपद्मपुराणे भौमवारव्रत-कथा सम्पूर्णा।

●

नातियों के साथ बढ़ता है। इस प्रकार कहकर मंगल भगवान् स्वर्गलोक को चले गये॥३१॥ समस्त सुखों को देनेवाला यह व्रत मैंने तुमसे कहा। जो इस व्रत को करेंगे उन्हें दरिद्रता कभी भी नहीं सतायेगी॥३२॥ यह व्रत्त स्त्रियों एवं विशेषकर पुरूषों को करना चाहिए। यह व्रत मुक्ति एवं स्वर्ग प्रदान करने वाला है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है॥३३॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' भाषाटीका में श्री पद्मपुराण की कही हुई भौमवार व्रत की कथा समाप्त। ●

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलव्रतोद्यापनम्

गौतम उवाच

उद्यापनविधिं ब्रूहि मम सम्यग् ग्रहेश्वर !।
येन ज्ञातेन जगतो ह्युपकारो महान्भवेत् ।।१।।

मङ्गल उवाच

विधेयो मण्डपः सम्यगष्टहस्तप्रमाणतः ।
स्थण्डिलं मध्यतः कार्यं हस्तैकेन प्रमाणतः ।।२।।
मण्डलं तु प्रकर्तव्यं मामकं रक्ततण्डुलैः ।
पूर्वोक्तानि च नामानि मण्डले पूजयेत् ततः ।।३।।

गौतम जी ने कहा कि, हे ग्रहेश्वर ! अब मंगलव्रत के उद्यापन की विधि अच्छी तरह बतलाइए। जिस उद्यापनविधि के जान लेने से संसार का कल्याण हो।।१।।

मंगलजी ने कहा– हे गौतमजी, आठ हाथ का मण्डप निर्माण करे, उस मण्डप के मध्य एक हाथ का स्थण्डिल (वेदी) निर्माण करे।।२।। उसमें रक्त (लाल), चावल से मेरा मण्डप बनावे। उस मण्डप में पहले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकविंशतिकोष्ठेषु चतुर्दीपान्वितेषु च ।
एकविंशतिकुम्भांश्च स्थापयित्वा मदग्रतः ।।४।।
सौवर्णीं प्रतिमां तत्र स्थापयेत् कलशोपरि ।
रक्तवस्त्रेण संवेष्ट्य पूजयेत् कुसुमैः शुभैः ।।५।।
अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण होमं खादिरसम्भवैः ।
अष्टोत्तरशतं हुत्वा दिक्पालांश्च हुनेत् ततः ।।६।।

बताये हुए मेरे इक्कीस नामों से पूजन करे।।३।। उसमें इक्कीस कोठों में इक्कीस नाम-मन्त्रों की पूजा करे। और चारों दिशाओं में चार दीप स्थापित करे।।४।। उन कलशों पर सुवर्ण की मेरी प्रतिमा स्थापित करे। और लाल वस्त्र लपेट कर सुगन्धित पुष्पों से पूजन करे।।५।। उसके बाद खैर की लकड़ी से 'अग्निर्मूर्धा०' इस मन्त्र से १०८ बार आहुति प्रदान करे। बाद में दसों दिग्पालों को आहुति दे।।६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अङ्गपूजा प्रकर्तव्या नामभिर्मम सर्वदा।
मङ्गलाय च पादौ तु भूमिपुत्रेति गुह्यके ।।७।।
ऋणहर्त्रे तु नाभौ च महाकालाय वक्षसि।
सर्वकामप्रदात्रे च मम बाहू प्रपूजयेत् ।।८।।
लोहितो हस्तयोश्चैव लोहिताक्षश्च कण्ठके।
आस्ये सम्पूजयेन्मां च सामगानां कृपाकरम् ।।९।।
धरात्मजं नासिकायां कुजं च नयनद्वये।
भौमं ललाटपट्टे च भूमिजाय भ्रुवोस्तथा ।।१०।।

और मेरे नाम-मन्त्रों से इस प्रकार अङ्गपूजा करे। 'मङ्गलाय नमः' कहकर चरणों की पूजा करे, 'भूमिपुत्राय नमः' इससे गुह्य भाग का पूजन करे।।७।। 'ऋणहर्त्रे नमः' से नाभि की, 'महाकालाय नमः' से वक्ष तथा 'सर्वकामप्रदात्रे नमः' से मेरे बाहुओं का पूजन करे।।८।। 'लोहिताय नमः' से हाथ, 'लोहिताक्षाय नमः' से कण्ठ का, सामगान करने वाले पर कृपा करने वाले 'सामगाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिनन्दननामानं मूर्ध्नि सम्पूजयेत् तथा ।
अङ्गारकं शिखायां तु यमं च कवचे पदा ॥११॥
सर्वरोगापहर्तारमस्त्रदेशे प्रपूजयेत् ।
आकाशे बृष्टिकर्तारं प्रहर्तारमधस्तथा ॥१२॥
सर्वाङ्गे च प्रपूज्योऽस्मि सर्वकामफलप्रदः ।
एवं सम्पूज्य चाङ्गेषु पश्चाद् गन्धादिनाऽर्चयेत् ॥१३॥

नमः' इससे मुख का पूजन करे॥९॥ 'धरात्मजाय नमः' से नासिका एवं 'कुजाय नमः' से दोनों नेत्रों का पूजन करे। इसी प्रकार 'भौमाय नमः' से भाल-ललाट में, 'भूमिजाय नमः' से भौंहों का, 'भूमिनन्दनाय नमः' से मस्तक की पूजा करे, 'अङ्गारकाय नमः' से 'शिखायै वषट्' कहे, उसी प्रकार 'यमाय नमः' से 'कवचाय हुँ' तथा 'सर्वरोगापहर्त्रे नमः' से 'अस्त्राय फट्' इस प्रकार कहे, 'वृष्टिकर्त्रे नमः' से आकाश, 'प्रहर्त्रे नमः' से नीचे, 'सर्वकामफलप्रदाय नमः' से सर्वाङ्ग का पूजन करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भोज्यैकविंशतिं विप्रान् दद्यात् कुम्भान् सवस्त्रकान् ।
आचार्यं पूजयेत् पश्चाद् दत्वा धेनुं स-वत्सकाम् ॥१४॥
सर्वं निवेदयेत् पीठं गुरवे च शुचिस्मितः ।
अछिद्रं याचयेत् तेभ्यः सर्वे ब्रूयुर्व्रतं शुभम् ॥१५॥
दत्वा दीना-ऽन्ध-कृपणान् स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः ॥१६॥

इति श्रीपद्मपुराणे मङ्गलव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम्।

इस प्रकार अङ्गों का पूजन कर, उसके बाद गन्ध आदि से पूजन करे॥१०-१३॥ तदनन्तर इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें वस्त्र के साथ घड़ा प्रदान करे। उसके बाद आचार्य का पूजन करे और उन्हें बछड़े सहित गाय प्रदान करें॥१४॥ और प्रसन्न चित्त से यजमान को चाहिए कि वह समस्त मण्डप एवं पीठ आचार्य को प्रदान करे। और उनसे इस व्रत की पूर्ण सफलता का आशीर्वाद ग्रहण करे॥१५॥ और अनाथों (दीनों-अपाहिजों) को भोजन करा.ने के बाद आप स्वयं मौन होकर भोजन करे॥१६॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित श्री शिवदत्तमिश्र शास्त्रीकृत भाषाटीका सहित मंगलव्रत की उद्यापन-विधि समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गल का ग्रहगोचर फल, यन्त्र-धारण तथा मन्त्र-जप-विधान

शुभ मङ्गल– जन्म राशि से मंगल ३, ६ तथा ११वें स्थान में हों, तो शुभकारक है।

इसका फल – शत्रुनाश, ऐश्वर्य, भूमि तथा वस्त्र की प्राप्ति कराता है। और राजा की कृपा, शरीर नीरोग एवं सर्वत्र विजय दिलानेवाला होता है।

अशुभ मङ्गल - जन्म राशि से मंगल १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० तथा १२वें स्थान में हो, तो अनिष्टकारक है। इसका फल-रक्त-विकार, चर्म-रोग, परदेश गमन, शत्रुभय और मित्रों से मतभेद होता है। इन्हीं अनिष्ट स्थान-स्थित मङ्गल की शान्ति के लिए यन्त्र-धारण, मन्त्र-जप, व्रत-कथा एवं स्तुति-स्तोत्र-पाठ आदि करना शुभ फलदायक होता है।

गजाग्नि-दिश्याथ-नवाद्रि-बाणा,
पाताल-रुद्रा-रस-संविलिख्य।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भौमस्य यन्त्रं क्रमशो विधार्य-
मनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

श्लोकार्थ– नव कोष्ठ (कोण) बनाकर ऊपर के कोष्ठ की ओर बाँयीं तरफ पहले ८, ३, १० अङ्क लिखकर द्वितीय कोष्ठ में बाँयीं ओर से पहले ९, ७, ५ तथा तृतीय खाने में ४, ११, ६ अङ्क लिखे। इस प्रकार इक्कीस संख्या वाला मङ्गल-यन्त्र निर्माण करे। गर्गाचार्य इस मङ्गल-यन्त्र को अनिष्ट नाशकारक कहते हैं।

मङ्गल-यन्त्रम्

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

यन्त्र-धारण-विधि-मंगलवार के दिन, अनार की लकड़ी की कलम से, अष्टगन्ध (श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, अगर, तगर, केशर, कस्तूरी, कपूर और गोरोचन) से, भोजपत्र पर मङ्गल-यन्त्र लिखना चाहिए। मंगलवार के दिन, ताँबे के ताबीज (यन्त्र) में लाल डोरे में गुहाकर पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, शुभ मुहूर्त में यन्त्र धारण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करना फलप्रद है।

भौम का वैदिक जप-मन्त्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपार्ठ.रेतार्ठ.सि जिन्वति।।

जप-संख्या– इस मन्त्र को दस हजार तथा कलियुग में चालीस हजार जप करना चाहिए। जप के बाद खैर की लकड़ी, तिल, पायस (खीर) तथा घृत से दशांश हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र-

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

इस मन्त्र को लाल वस्त्र धारण कर, सात, पाँच या तीन माला जपे। भोजन में गुड़ से बना हुआ हलुआ या लड्डू इत्यादि खाये, नमक नहीं।

पुराणोक्त भौम-मन्त्र-

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसम-प्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ-पृथ्वी के पुत्र, बिजली के समान कान्ति वाले, हाथों में शक्ति धारण किये हुए, भगवान् मङ्गल को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं प्रणाम करता हूँ।

भौम गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

मङ्गल ग्रह की मन्त्र-जपादि तालिका

ग्रह	बीज-मन्त्र	जप-संख्या	आराधना	धारण
मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	१०,००० सवा दो घड़ी	शिव-स्तुति	प्रवाल

दान– ताँबा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, मसूर की दाल, भूमि, विद्रूम।

मंगल का व्रत पैंतालिस या इक्कीस मंगलवारों तक करना चाहिए। वैसे, आवश्यकतानुसार यह व्रत अधिक दिनों तक भी किया जा सकता है। ●

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री रचित

मङ्गल-चालीसा

दोहा–सन्तशरण पदकञ्जयुत, महि धरि शीश नवाय।
मङ्गल-चालीसा लिखौं, मोकहँ होउ सहाय।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। चौपाई।।

जय धरणीसुत मङ्गलदेवा।
पूजत निशिदिन सुर-नर देवा।।१।।
लोहित वर्ण मुकुट सिर धारे।
रक्त-वसन तन सकल सँवारे।।२।।
शान्त स्वरूप भुजा है चारी।
वरदायक भक्तन सुखकारी।।३।।
कर में कमल शक्ति अरु शूला।
मोपर हो नित ही अनुकूला।।४।।
पुरी अवन्ती उत्पति देशा।
जानत सब वाहन तव मेषा।।५।।
तव पूजन-विधि कहउँ बखानी।
जेहि ते पावै सब सुख प्रानी।।६।।
मङ्गलवारहिं भोर नहाई।
लाल तिलक मस्तक लगवाई।।७।।
गोमय से आँगन लिपवावै।
अष्ट-कमल निर्माण करावै।।८।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मण्डप मँह जल-कुम्भ रखावै ।
तेहि पर स्वर्णमूर्ति पधरावै ।।९।।
रक्तवस्त्र आच्छादन कीजै ।
विधिवत् मङ्गलदेवहिं पूजै ।।१०।।
धूप-दीप नैवेद्य मँगावै ।
लाल पुष्प अरु वस्त्र चढ़ावै ।।११।।
चूर्ण हरिद्रा लेप मँगाई ।
मङ्गलदेवहिं देय चढ़ाई ।।१२।।
चोवा चन्दन और गुलाला ।
पहिरावै अड़हुल की माला ।।१३।।
दाड़िम फल को आगे राखै ।
प्रेम समेत विनय बहु भाषै ।।१४।।
इक्कीस मोदक भोग लगावै ।
ताको विप्रन महँ बँटवावै ।।१५।।
प्रणवउँ नित्य तुमहिं भूमासुत ।
तव चरणन रत हो मेरा चित ।।१६।।
हरहु कष्ट यह विनय निवेदित ।
पूजन करहुँ तुमहि सब अर्पित ।।१७।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिपुत्र तुम कष्ट निवारहु ।
विपद-ग्रस्त हौं मोहिं उबारहु ॥१८॥
जो जन तुम्हरो ध्यान लगावैं ।
जग में जीवन को सुख पावैं ॥१९॥
सुमिरे नाम तुम्हारो मन में ।
तेहिकर दुःख विनशे इक छनमें ॥२०॥
मोहिं पर कृपा करहु अब नाथा ।
बरनौ कहँ लगि तव गुन-गाथा ॥२१॥
सुर-नर मुनि काँपै तव त्रासा ।
कृपा किये दुःख होय विनाशा ॥२२॥
जन्म-राशि में छठवें वासा ।
सब विधि नर को होय सुपासा ॥२३॥
तृतीय एकादश वास तुम्हारा ।
नर होवे विजयी संसारा ॥२४॥
अष्टम नवम प्रथम जब रहहू ।
बहुविधि पीड़ित नर को करहू ॥२५॥
अशुभ ठौर है पञ्चम वासा ।
सब कारज को होवै नाशा ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तम दशम रोग अस्थाना ।
नर पावै बहुविधि दुःख नाना ।।२७।।
द्वाद्वश में हो गमन तुम्हारा ।
सब विधि कष्ट सहै नर सारा ।।२८।।
तुम्हरो यन्त्र भुजा में धारे ।
अशुभ दोष नर सकल निवारे ।।२९।।
अयुत(१० हजार) बार नर जपै जो कोई ।
मिटै कष्ट सुख सिधि सब होई-।।३०।।
चार अयुत जप कलि महँ कीजै ।
त्रिविधि ताप तन को सब छीजै ।।३१।।
जप समाप्त करि होम करावै ।
खदिर काष्ठ तिल घृत मँगवावै ।।३२।।
मन्त्र सहित आहुति जब देवै ।
निश्चय सो नर सब सुख लेवै ।।३३।।
व्रत कीजै पैंतालिस बारा ।
सभी दुःखों का हो निस्तारा ।।३४।।
गेहूँ गुड़ युत भोजन करहू ।
लवण अम्ल आदिक परिहरहू ।।३५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करि संकल्प करै व्रत नेमा ।
तव चरणन राखै दृढ़ प्रेमा ॥३६॥
तेहि पर कृपा करहु तुम स्वामी ।
समदर्शी तुम अन्तर्यामी ॥३७॥
जेहि पर होवै कोप तुम्हारा ।
ता कहँ कोउ नहिं जग रखवारा ॥३८॥
राजा होय या होय भिखारी ।
तव कोपानल हो वह छारी ॥३९॥
तव महिमा जानै संसारा ।
भक्तनको सुख देत अपारा ॥४०॥

दोहा

जय-जय मङ्गल देवता, धरौ तुम्हारो ध्यान ।
जो नर पूजत प्रेम से, तेहि कर हो कल्यान ॥१॥
सन्तशरण को तनय हूँ, शिवदत्त मिश्र सुनाम ।
देवरिया मण्डल बसूँ, धाम मझौली ग्राम ॥२॥
उन्नीस सौ इक्यासी सन् की, अगहन कृष्णा मास ।
चालीसा रचना कियो, तव चरणन को दास ॥३॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री कृत विविध-विषय विभूषित ऋणमोचन-मङ्गलस्तोत्र समाप्त।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आरती जगदीश्वर भगवान् श्री मङ्गलदेव की

ॐ जय जगदीश हरे प्रभु ! जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे।। ॐ जय० ।।१।।
जो ध्यावै फल पावै दुःख विनसै मन का।।प्रभु० ।
सुख-सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।। ॐ जय० ।।२।।
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी।।प्रभु० ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी।। ॐ जय० ।।३।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी।।प्रभु० ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।ॐ जय० ।।४।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।।प्रभु० ।
मै मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता।।ॐ जय० ।।५।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती।।प्रभु० ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।ॐ जय० ।।६।।
दीन बन्धु दुःखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।।प्रभु० ।
करुणा हस्त उठाओ, शरण पड़ा तेरे।। ॐ जय० ।।७।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।।प्रभु० ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।ॐ जय० ।।८।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आरती भगवान् श्री मङ्गलदेव की

जय श्री भौम देवा, स्वामी जय श्री भौम देवा,
सब में आप शिरोमणि मानत सब देवा।
सभी ग्रहों में बढ़कर महिमा अति भारी,
धरणी पुत्र कहायो मानत संसारी।।जय श्री०।।
क्रोध दशा में हो जाते तुम अनिष्ट कर्ता,
राजी हो बन जाते सब ही के दुःख हर्ता।।जय श्री०।।
राजा रामचन्द्रजी ने कष्ट सही भारी,
विमुख हुए से भुगता राजा ने विपदा सारी।। जय श्री०।।
सब में आप प्रबल हो जग में महिमा तव भारी,
धन-सम्पति सुख देवो कर दो सुखियारी।।जय श्री०।।
भौमवार है बार आपका पूजत हैं सब नर-नारी,
दान-मान बहु करते प्रेम सहित भारी।जय श्री०।।
भौम देव की आरती जो कोई नर गावे,
'शिव' कहते निश्चय ही सो नर भौम दया फल पावे।।जय श्री०।।

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

GC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारे यहाँ की प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें मँगाकर अवश्य लाभ उठावें

श्रीसूक्त- पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)	मानसागरी भा०टी०	१००)
शिवपुराण भाषा ग्लेज	२००)	जातकाभरण भाषा टीका	८०)
चाणक्यनीतिदर्पण भा०टी०	२०)	बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)	ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)	कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)	चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)	भाव कुतूहल भाषा टीका	७५)
आनन्द रामायण भाषा	२८०)	मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
राधेश्याम रामायण	४०)	लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)	घाघ-भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
प्रेमसागर	६०)	विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
श्रीमद् देवी भागवत भा०टी० सांची	६००)	स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
श्रीमद्भागवत महापुराण भा०टी० साँची	५००)	शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)	शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
दुर्गार्चन-पद्धति भा०टी०	१००)	प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२५०)
दुर्गासप्तशती भा०टी० सजिल्द । मोटे अक्षरों में	६०)	कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)	विष्णुयाग पद्धति भाषा टीका	२००)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)	विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)	उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)	वास्तुशान्ति हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)	गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा कवच ३२ पेजी मूल	३)	धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
दुर्गा रामायण	३०)	संकटी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा०टी०	६०)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	३०)	एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
मन्त्र-सागर भाषा टीका	७५)	कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	५०)
बगलोपासनपद्धति-बगलामुख रहस्य भाषा टीका	४०)	हनुमद्-रहस्य भाषा टीका	६०)
दत्तात्रेय तन्त्र-भाषा टीका	२०)	गायत्री-रहस्य भाषा टीका	६०)
छड्डीस तन्त्र भाषा टीका	२०)	बृहत्-स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	७५)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)	रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा०टी०	२००)	हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
		किरातार्जुनीयम् १-२ सर्ग भा०टी०	१५)
		सोरठी बृजाभार ९६ भाग	७५)

प्राप्तिस्थान- श्री गणेश पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection